❍ 16 / 07 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∫∫ 1 ∫∫ होमवर्क (Marks: 5∗4=20)

➢➢ ∗सबस मोह निकाल सर्विस लायक बने ?∗

➢➢ ∗खारे को मीठा बनाने की सेवा की ?∗

➢➢ ∗कर्म और योग के बैलेंस द्वारा निर्णय शक्ति को बढाया ?∗

➢➢ ∗एक बाबा से सर्व संबंधो का रस लिया ?∗

____

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

☆ ∗अव्यक्त पालना का रिटर्न∗ ☆

❂ ∗तपस्वी जीवन∗ ❂

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

〰✧ ∗अभी समय प्रमाण बेहद के वैराग्य वृत्ति को इमर्ज करो। बिना बेहद के वैराग्य वृत्ति के सकाश की सेवा हो नहीं सकती।∗ वर्तमान समय जबकि चारों ओर मन का दु:ख और अशान्ति, मन की परेशानियां बहुत तीव्रगति से बढ़ रही हैं। तो जितना तीव्रगति से दु:ख ही लहर बढ़ रही हैं उतना ही आप सुख दाता के बच्चे अपने मन्सा शक्ति से, सकाश की सेवा से, वृत्ति से चारों ओर सुख की अंचली का अनुभव कराओ।

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

———————————————————

✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°
☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆
❂ *श्रेष्ठ स्वमान* ❂
✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

✺ *"मैं विजय के तिलकधारी आत्मा हूँ"*

〰✧ सदा अपने मस्तक पर विजय का तिलक लगा हुआ अनुभव होता है? अविनाशी तिलक अविनाशी बाप द्वारा लगा हुआ है। तो तिलक है स्मृति की निशानी। तिलक सदा मस्तक पर लगाया जाता है। तो मस्तक की विशेषता क्या है? याद या स्मृति। *तो विजय के तिलकधारी अर्थात् 'सदा विजय भव' के वरदानी। जो स्मृति-स्वरूप हैं वे सदा वरदानी हैं। वरदान आपको मांगने की आवश्यकता नहीं है।* वरदान दे दो-मांगते हो?

〰✧ *मांगना क्या चाहिए-यह भी आपको नहीं आता था। क्या मांगना चाहिए-वह भी बाप ही आकर सुनाते हैं। मांगना है तो पूरा वर्सा मांगो।* बाकी हद का वरदान-एक बच्चा दे दो, एक बच्ची दे दो, एक मकान दे दो, अच्छी वाली कार दे दो, अच्छा पति दे दो - यही मांगते रहे ना। बेहद का मांगना क्या होता है-वो भी नहीं आता था। इसीलिए बाप जानते हैं कि इतने नीचे गिर गये जो मांगते भी हद का हैं, अल्पकाल का हैं। आज कार मिलती है, कल खराब हो जाती है, एक्सीडेन्ट हो जाता है। फिर क्या करेंगे? फिर और मांगेंगे-दूसरी कार दे दो!

~✧ आप तो अधिकारी बन गये। बेहद के बाप के बेहद के वर्से के अधिकारी बन गये। अभी स्वत: ही वरदान प्राप्त हो ही गये। जब दाता के बच्चे बन गये, वरदाता के बच्चे बन गये-तो वरदान का खजाना बच्चों का हुआ ना। तो जब वरदानों का खजाना ही हमारा है तो मांगने की क्या आवश्यकता है! *अभी खुशी में रहो कि 'मांगने से बच गये। जो सोच में भी नहीं था वह साकार रूप में मिल गया! हर बात में भरपूर हो गये, कोई कमी नहीं'।*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

~✧ अशरीरी के लिए विशेष 4 बातों का अटेन्शन रखो :- 1. कभी भी अपने आपको भूलाना होता है तो दुनिया में भी एक सच्ची प्रीत में खो जाते हैं। तो सच्ची प्रीत ही भूलने का सहज साधन है। *प्रीत दुनिया को भूलाने का साधन है, देह को भूलाने का साधन है।*

~✧ 2. दूसरी बात *सच्चा मीत भी दुनिया को भूलाने का साधन है।* अगर दो मीत आपस में मिल जाएँ तो उन्हें न स्वयं की, न समय की स्मृति रहती है। 3. तीसरी बात दिल के गीत - *अगर दिल से कोई गीत गाते हैं तो उस समय के लिए वह स्वयं और समय को भूला हुआ होता है।*

﹏✧ 4. चौथी बात - यथार्थ रीत। अगर *यथार्थ रीत है तो अशरीरी बनना बहुत सहज है।* रीत नहीं आती तब मुश्किल होता है। तो एक हुआ प्रीत, 2.- मीत, 3.- गीत, 4.- रीत।

✧˚ ° ••☆••✧˚ ° ••☆••✧˚ ° ••☆••✧˚ °

∬ 4 ∬ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧˚ ° ••☆••✧˚ ° ••☆••✧˚ ° ••☆••✧˚ °

✧˚ ° ••☆••✧˚ ° ••☆••✧˚ ° ••☆••✧˚ °

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧˚ ° ••☆••✧˚ ° ••☆••✧˚ ° ••☆••✧˚ °

﹏✧ *जैसे बहुत ऊँचे स्थान पर चले जाते हो तो चक्कर लगाना नहीं पड़ता लेकिन एक स्थान पर रहते सारा दिखाई देता है। ऐसे जब टॉप की स्टेज पर, बीजरूप स्टेज पर, विश्व-कल्याणकारी स्थिति में स्थित होंगे तो सारा विश्व ऐसे दिखाई देगा जैसे छोटा 'बाल' है।*

✧˚ ° ••☆••✧˚ ° ••☆••✧˚ ° ••☆••✧˚ °

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧˚ ° ••☆••✧˚ ° ••☆••✧˚ ° ••☆••✧˚ °

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- पतितो को पावन बनाकर बाप की दिल पर चढ़ना"*

➳ _ ➳ मै चमकती सितारा आत्मा मीठे बाबा को एक प्यारा सा नगमा *हमने तुझको प्यार किया है जितना, कौन करेगा इतना* सुना रही हूँ... कि नगमा सुनते सुनते मीठे बाबा ने मुझे मधुबन घर के डायमण्ड हाल में बुला लिया... हाल में पहुंच कर दादी गुलजार के तन में बापदादा को मुस्कराते देखती हूँ... दृष्टि से दृष्टि का मिलन हुआ और मै आत्मा परमात्मा के प्रेम नयनों में खो गयी... प्रेम वर्षा में आत्म परमात्म दिल भीग गए... और ज्ञान के इंद्रधनुष ने छटा बिखेरी...

❉ *मीठे बाबा मुझे मेरे उज्ज्वल भविष्य की सुगम राह बताते हुए बोले :-* "मीठे प्यारे फूल बच्चे... जिन खुशियो भरी राहो पर चलकर आपने अपने जीवन को खुबसूरत और प्यारा बनाया है... उन्ही खुशियो से पूरे विश्व को भी महकाओ... और *सहज ही मीठे बाबा के दिल में मणि सा सजकर मुस्कराओ*... मीठे बाबा की तरहा हर दिल को पावनता से सजाओ..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा अपने प्यारे बाबा, को असीम प्यार मुझ आत्मा पर बरसाते देख बोली :-* "मेरे दुलारे बाबा... आपने बहुमूल्य ज्ञान रत्नों से सजाकर मुझे कितना धनवान् बनाया है... *इन ज्ञान रत्नों की खनक को पूरे विश्व में गूंजा रही हूँ.*.. सबको पावनता का खुबसूरत रास्ता दिखाने वाली महान भाग्य से सज गयी हूँ..."

❉ *प्यारे बाबा मुझे अपनी बाँहों के आगोश में लेते हुए वरदानी से भरते हुए बोले :-* " मीठे सिकीलधे बच्चे... *बाप समान विश्व कल्याणकारी बनकर, पूरे विश्व को खुबसूरत पावन दुनिया सा सजाओ.*.. सब जगह सुख शांति और प्रेम की अविरल धारा बहे... ऐसा दिलकश मौसम बनाओ... हर दिल सुख और प्रेम

से भरा हो, ऐसी पावन दुनिया इस धरती पर बसाओ..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा अपने प्यारे बाबा को मुझ आत्मा की ओर इतनी उम्मीदों से देखते हुए बोली :-* "मीठे प्यारे बाबा मेरे... मै आत्मा *आप समान बनकर पूरे विश्व का कल्याण कर रही हूँ.*.. सबको पतित से पावन बनाकर,आपसे विश्व का मालिकाना हक दिलवा रही हूँ... और आपकी आँखों का सितारा बनकर मुस्करा रही हूँ..."

❉ *मीठे बाबा सम्मुख बेठे मेरे जनमो के बिछड़ेपन की प्यास बुझाते हुए बोले :-* " लाडले प्यारे मेरे बच्चे... सबके दामन को सच्चे सुखो से भरने वाले मा सुख सागर बनकर, ईश्वरीय दिल पर राज करो... *पूरे विश्व को विकारो से मुक्त कर पावनता के सुखो से भरपूर करो.*.. दिन रात यही धंधा कर, मीठे बाबा के नयनों में नूर बनकर इठलाओ..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा भगवान पिता को रत्नों को दौलत से मुझ आत्मा को मालामाल करते देख असीम प्यार से भर उठी और बोली :-* "मीठे प्यारे मेरे बाबा... आपने अथाह ज्ञान दौलत से मुझ आत्मा को इतना भरपूर कर दिया है... कि यह गागर हर दिल पर छलकती है... *सब सुखी हो जाएँ पूरा विश्व पावन धरा बन... खुशियो की किलकारियों से भर जाएँ यही दिल की चाहत है..*." ऐसी मीठी रुहरिहानं कर,मीठे बाबा परमधाम और मै आत्मा अपने खेल जगत में आ गयी...

∫∫ 7 ∫∫ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- कौड़ी से हीरे जैसा बनने का पुरुषार्थ करना है*"

➺ _ ➺ इस नश्वर दुनिया की नश्वर बातों में उलझा मेरा यह जीवन जो कौड़ी तुल्य बन गया था उसे मेरे सत्य सदा शिव परमात्मा बाप ने आ कर सत के संग द्वारा हीरे तुल्य बनाने का जो रास्ता दिखाया उस रास्ते पर चल *अपने कौड़ी तुल्य जीवन को हीरे तुल्य बनाने का तीव्र पुरुषार्थ करने का दृढ़ संकल्प करके, अपने दिलाराम बाबा की याद में मैं अशरीरी हो कर बैठ जाती हूँ* और अशरीरीपन की इस अवस्था मे देह से न्यारी हो कर मैं आत्मा परमात्म प्यार के पंख लगा कर उड़ चलती हूँ अपने दिलाराम परमात्मा बाप के पास।

➺ _ ➺ परमात्म प्यार की पालकी में सवार मैं आत्मा इस दुनिया के नजारो को देखती जा रही हूं। मैं देख रही हूं कैसे दुनिया के लोग विनाशी चीजो को पाने की होड़ में अपने जीवन को व्यर्थ गंवा रहें हैं। *केवल खाना, पीना और सोना इसी को जीवन का सच समझ कर अनमोल श्वासों की पूंजी को कौड़ियो के भाव नष्ट कर रहें हैं*। इस बात से भी अनजान है कि सत्य परमात्मा बाप सत का संग करा कर हमारे जीवन को हीरे तुल्य बनाने आये हुए है। यह विचार करते करते मैं जा रही हूं और मन ही मन अपने शिव पिता को धन्यवाद देती जा रही हूं जिन्होंने मुझे श्वांसों के इस अनमोल खजाने को सफल करने का सत्य रास्ता दिखा दिया।

➺ _ ➺ अब मुझे केवल इस सत्य की राह पर आगे बढ़ते जाना है। श्वांसों श्वांस अपने बाबा की याद में रह श्वांसों की इस अनमोल पूंजी को सफल करना है। *मेरा यह ब्राह्मण जीवन मेरे दिलाराम बाबा की अमानत है इसलिए मनमत या परमत पर चल मुझे इस अमानत में अब खयानत नही डालनी* बल्कि हर कदम श्रीमत पर चल ईश्वरीय याद में रह, ईश्वरीय सेवा में अपने संकल्प, समय और श्वांसों को लगा कर अपने कौड़ी तुल्य जीवन को हीरे तुल्य बना कर सफल करना है। *स्वयं से यह बातें करते करते मैं पांचो तत्वों को पार कर, पहुंच जाती हूँ फरिश्तों के उस आलौकिक दिव्य वतन में जहां मैं अपने दिलाराम बाबा के साथ बैठ कर मीठी मीठी रूहरिहान कर सकती हूं*।

➺ ➺ जैसे ही मैं वतन में पहंच कर अपना सूक्ष्म आकारी शरीर धारण

करती हूं मेरे दिलाराम मीठे शिव बाबा भी परमधाम से नीचे वतन में आ जाते हैं और आ कर अपने आकारी रथ पर विराजमान हो जाते हैं। *मुझे देखते ही मेरे दिलाराम बाबा मुस्कराते हुए अपनी बाहें फैला लेते हैं और मैं फ़रिशता दौड़ कर उनकी बाहों में समा जाता हूँ*।

➳ _ ➳ इस अलौकिक मिलन के असीम सुख की अनुभूति में आत्म विभोर हो कर मैं अपने दिल की भावनाओ को अपने दिलाराम बाबा के सामने अभिव्यक्त कर रही हूं:- *"हे मेरे प्राणेश्वर बाबा अब आप ही मेरा संसार हो, आप ही मेरे सर्वस्व हो। मेरे जीवन को सुखमय बनाने वाले आप ही मेरे दिल के सच्चे सच्चे मीत हो। अज्ञान अंधकार में भटक कर मैने तो अपने जीवन को कौड़ी तुल्य बना लिया था किंतु आपने आ कर मुझे हीरे जैसा बेदाग बना दिया। आपकी याद अब मेरी श्वांसों में बस गई है"।*

➳ _ ➳ अपने मन के भावों को व्यक्त करते करते मैं अपने दिलाराम बाबा के प्यार की गहराई में खो जाती हूँ और उनसे आ रही प्रेम की किरणों से स्वयं को भरपूर करने लगती हूं। अपने *दिलाराम बाबा के प्यार की अनमोल यादों को दिल मे सँजोये अब मैं जागती ज्योत बन लौट रही हूं वापिस अपने साकारी तन में और सच्ची सच्ची मीरा बन हर श्वांस में अपने गिरधर गोपाल अपने दिलाराम बाबा की याद को समाये अपने जीवन को हीरे तुल्य बना रही हूं*। मन मे अब यही धुन निरन्तर बज रही है "मेरे तो शिवबाबा एक, दूसरा ना कोई"।

∫∫ 8 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं कर्म और योग के बैलेन्स द्वारा निर्णय शक्ति को बढ़ाने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं सदा निश्चिन्त आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

————————————————————

∫∫ 9 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा एक बाबा से सर्व संबंधों का रस लेती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा किसी की भी याद आने से सदा मुक्त हूँ ।*
✺ *मैं सहजयोगी आत्मा हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

————————————————————

∫∫ 10 ∫∫ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ *सेवाधारी अर्थात् बड़ों के डायरेक्शन को फौरन अमल में लाने वाले।* लोक संग्रह अर्थ कोई डायरेक्शन मिलता है तो भी सिद्ध नहीं करना चाहिए कि मैं राइट हूँ। भल राइट हो लेकिन लोकसंग्रह अर्थ निमित्त आत्माओं का डायरेक्शन मिलता है तो सदा - *'जी हाँ', 'जी हाजर', करना यही सेवाधारियों की विशेषता है, यह झुकना नहीं है, नीचे होना नहीं है लेकिन फिर भी ऊँचा जाना है।* कभी-कभी कोई समझते हैं अगर मैंने किया तो मैं नीचे हो जाऊँगी, मेरा नाम कम हो जायेगा, मेरी पर्सनैलिटी कम हो जायेगी, लेकिन नहीं। मानना अर्थात् माननीय बनना, बड़ों को मान देना अर्थात् स्वमान लेना। तो ऐसे सेवाधारी हो जो अपने मान शान का भी त्याग कर दो। अल्पकाल का मान और

शान क्या करेंगे। *आज्ञाकारी बनना ही सदाकाल का मान और शान लेना है।* तो अविनाशी लेना है या अभी-अभी का लेना है? तो सेवाधारी अर्थात् इन सब बातों के त्याग में सदा एवररेडी।

➽ _ ➽ *बड़ों ने कहा और किया। ऐसे विशेष सेवाधारी, सर्व के और बाप के प्रिय होते हैं। झुकना अर्थात् सफलता या फलदायक बनना।* यह झुकना छोटा बनना नहीं है लेकिन सफलता के फल सम्पन्न बनना है। उस समय भल ऐसे लगता है कि मेरा नाम नीचे जा रहा है, वह बड़ा बन गया, मैं छोटी बन गई। मेरे को नीचे किया गया उसको ऊपर किया गया। *लेकिन होता सेकण्ड का खेल है। सेकण्ड में हार हो जाती और सेकण्ड में जीत हो जाती।* सेकण्ड की हार सदा की हार है जो चन्द्रवंशी कमानधारी बना देती है और सेकण्ड की जीत सदा की खुशी प्राप्त कराती जिसकी निशानी श्रीकृष्ण को मुरली बजाते हुए दिखाया है। तो कहाँ चन्द्रवंशी कमानधारी और कहाँ मुरली बजाने वाले! 'तो सेकण्ड की बात नहीं है लेकिन सेकण्ड का आधार सदा पर है'। तो इस राज़को समझते हुए सदा आगे चलते चलो।

✺ *ड्रिल :- "बड़ों ने कहा और किया" - ऐसे विशेष सेवाधारी बनकर रहना।"*

➽ _ ➽ *भृकुटी सिंहासन पर विराजमान मैं आत्मा... एक चमकती हुई दिव्य ज्योति...* अपने निज् गुण... निज् स्वधर्म को जान... बैठी हूँ एक बाप की लगन में मग्न होकर... न देह का भान... न इस दैहिक दुनिया का भान... अपने आप में मस्त... बैठी हूँ तपस्या धाम में... तपस्या धाम... पवित्र भूमि... भगवान के अवतरण की भूमि जहाँ *बापदादा से योग लगाना नहीं पड़ता... स्वतः ही लग जाता है... बापदादा से मन के तार को जुड़ने में पुरुषार्थ नहीं करना पड़ता... वहाँ आप और बाप... बाप और आप ही दिखाई देते हैं...*

➽ _ ➽ *"तपस्या करनी हैं तो तपस्या धाम में जाओ..."* और मैं आत्मा तपस्या धाम में बैठी बापदादा का आह्वान करती हूँ... मन बुद्धि रूपी घोड़े को बाप की याद रूपी लगाम से मैं आत्मा पहुँच जाती हूँ परमधाम... सुनहरे किरणों के प्रकाश की दुनिया में... पवित्रता... शांति का साम्राज्य छाया हुआ हैं जहाँ...

देह की दुनिया से परे... अपने ओरिजिनल स्वरुप में... *मैं आत्मा बिन्दुरूप में बिन्दुरूपी बाप को और सभी आत्माओं को निहार रही हूँ... जो तन-मन-धन से... मंसा-वाचा-कर्मणा से एक बाप को प्रत्यक्ष करने पर लगे है...*

➺ _ ➺ हम सभी आत्मायें एक बाप की लगन में और अपने आप को सदा बाप के प्यार के झूले में झूलता अनुभव करते... सर्व शक्तियों से भरपूर होते जा रहें हैं... रंग बिरंगी किरणों की फाउंटेन में हम सभी आत्मायें परिपूर्ण होते जा रहे हैं... और *बाबा के साथ हम सभी आत्मायें पहुँचते हैं... सूक्ष्म वतन में... जहाँ ब्रह्मा बाबा हमारा इंतजार कर रहे थे...* शिवबाबा का ब्रह्मा बाबा के सूक्ष्म शरीर में प्रवेश और हमारा बिन्दुरूप से फ़रिश्ता स्वरुप में परिवर्तन का यह नजारा सूक्ष्म वतन में पूनम के चाँद के जैसे चांदनी बिखेर रहा हैं...

➺ _ ➺ दिव्य स्वरूप वह ब्रह्मा बाबा का... अलौकिकता से भरे नयनों से प्यार की वर्षा.. हम सभी आत्माओ को भीगाता जा रहा हैं... ब्रह्मा तन में विराजमान शिवबाबा ने मुरली चलाई... "मेरे लाडले बच्चों..." और हम सभी फ़रिश्ते झूम उठे... बाबा ने कहा... "बच्चे सेवाधारी हो कि अथक सेवाधारी हो? सेवा में क्या मेरेपन की भावना और मैंने किया यह संकल्प तो हावी नहीं हो रहा है? *बड़ों ने कहा और किया।* ऐसे विशेष सेवाधारी, सर्व के और बाप के प्रिय होते हैं तो क्या विशेष सेवाधारी बन के रहते हो? *'जी हाँ', 'जी हाजर', करना यही सेवाधारियों की विशेषता है, यह झुकना नहीं है, नीचे होना नहीं है लेकिन फिर भी ऊँचा जाना है।"*

➺ _ ➺ *"आज्ञाकारी बनना ही सदाकाल का मान और शान लेना है... तो अविनाशी लेना है या अभी-अभी का लेना है? तो सेवाधारी अर्थात् इन सब बातों के त्याग में सदा एवररेडी..."* बापदादा की यह अमूल्य शिक्षाओं को हम सभी फ़रिश्ते आत्मायें अपने में धारण करते जा रहें हैं और मेरेपन के त्याग से अपने पुरूषार्थ को उच्च शिखर पर पहुँचा रहे हैं... अमूल्य शिक्षाओं के खजानों से भरपूर हम आत्मायें वापिस अपने स्थूल शरीर में प्रवेश करते हैं और हर कार्य चाहे लौकिक हो या अलौकिक सेवा हो... मेरेपन के भावना से परे हो करके करते जा रहे हैं...

⨀_⨀ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔